ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 149-150

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

यमदीप उपन्यास और किन्नर जीवन

सनोज पी आर

शोध अध्येता, हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, कालिकट (केरल) भारत

Received- 06.12. 2019, Revised- 10.12.2019, Accepted - 15.12.2019 E-mail: rksharpur2@gmail.com

सारांश : *इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में हिन्दी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श और दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श जैसे महत्वपूर्ण प्रसंग उभर कर सामने आए। इनके साथ भारतीय समाज के उन पक्षों पर भी विमर्श की आवश्यकता है जो सदियों से उपेक्षित जीवन जी रहे है। अब एक नए विमर्श की आवश्यकता है, वह है– 'थर्ड जेण्डर'। हमारे समाज के दो स्तम्भ है पुरुष और स्त्री। आदिम सभ्यता से ही दोनों का काम आपसी सहयोग से बच्चे पैदा करना और मानवजाति को आगे बढ़ाना रहा है। लेकिन हमारे समाज में इन दो लिंगों के अलावा भी एक अन्य प्रजाति का अस्तित्व मौजूद है। 'जो न पुरुष है न स्त्री। वह न संबंध बना सकता है और न ही गर्भ धारण कर सकता है ।*

कुंजी शब्द – हिन्दी साहित्य, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, जेण्डर, मानव जाति, अस्तित्व।

जिस समाज में स्त्री और पुरुष रहते हैं, उसी समाज में एक वर्ग और है, जो पारिवारिक अनुष्ठानों में नाच गा कर आशीष देने का कार्य करता है। माना जाता है कि इस वर्ग का आशीर्वाद आनुवंशिक समृद्धि लाती है। पर समाज का कोई भी व्यक्ति उनके जैसे जीवन की स्वप्न में भी आकांक्षा नहीं करता। इस वर्ग को मुख्यधारा के समाज में बहिष्कृत, व्यंग्य, घृणा, तिरस्कार आदि सहने को अभिशप्त इस श्रेणी के इंसानों की यौन स्थिति के आधार पर कई और नामों से पुकारा जाता है जैसे– 'थर्ड जेंडर'। जिसे 'हिजड़ा', 'किन्नर', 'ख्वाजासरा' 'खोजा', 'नपुंसक', 'उभयलिंगी', 'शिखण्डी,' 'छक्का' आदि नामों से पुकारा जाता है। थर्ड जेंडर के भीतर की एक पहचान है इनका असली नाम, हिजड़ा यौनिक पहचान के साथ ही समाज द्वारा मिटा दिया जाता है। संविधान में इन्हें इंटरसेक्स, ट्रांससेक्सुअल और ट्रांसजेंडर के रूप में पहचाना गया और इनकी पहचान को थर्ड जेंडर में ट्रांसजेंडर श्रेणी में रखा गया ।

' यमदीप' उपन्यास का कथानक हिजड़ा नाजबीबी के इर्द गिर्द खूमता हैद्य वह इस उपन्यास की नायिका है। जब से उनका जन्म हुआ तब से लेकर घरवाले परेशान है। क्योंकि बच्चा हिजड़ा है। फिर भी मां उनसे बहुत प्यार करती है। वह पढाई में तेज थी। लेकिन आठवीं कक्षा में पढते वक्त कुदरत की करिश्मा के कारण आगे वह पढ न पाई। क्योंकि उस समय उसमें स्त्रीयोजित शरीरांग के साथ दाड़ी, मूंछ भी आ गए। वह दिल से टूट गई। समाज उन्हें देखकर हंसने लगे। समाज के भय से तंग आकर मां–बाप हमेशा सोच रहे थे कि इसे क्या करें ? फिर उन्हें स्वयं इस बात का नतीजा हो गया कि यहाँ पडा रहने से कोई फायदा नहीं, सिर्फ प्रताड़ना के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा। इसी विचार से वह हिजड़ों की दुनिया में हिजड़ों की बस्ती में चली गई। पहले उनका नाम नंदरानी थी हिजड़ों की बस्ती में आ जाने के बाद उनका नाम नाज बीबी रख दिया गया।

हिजड़ों की दुनिया में बुजुर्ग व्यक्ति उनके गुरु होते है। इस उपन्यास में उनके गुरु का नाम महताब गुरु है। हिजड़े लोग नाच गाकर जो कुछ कमाता है, इसका एक हिस्सा गुरु को देते थे। शहर में किसी की शादी हो या बच्चे के जन्म हो शगुन उतारने केलिए हिजड़ों का आना एक रिवाज है। साधारण लोग उनसे दूर रहना ही पसंद करते हैं। एक बार नाज बीबी और उनके साथियों ने मिलकर एक पागल औरत की मदद की। जब उस औरत प्रसव पीड़ा में तड़प रही थी तब आस पास के साधारण लोग उनकी सहायता करने में हिचकते थे। उस समय ये हिजड़े ही उनकी प्रसूति में सहायता दी। प्रसूति के बाद वह पागल औरत मर जाती है। उस नन्हे बच्चे को अपनाने में वहां के लोग तैयार नहीं हुए। यह देखकर हिजड़े कहते हैं ."अरे हम हिजड़े है, हिजड़े.....इन्सान है क्या मुँह फेर लें" । बच्चे को वहां छोड़ आने का मन न होने के कारण ये हिजड़े उसे साथ लेकर अपनी बस्ती की ओर चल पड़े।

हम इक्कीसवीं सदी के मशीनी युग में जी रहे हैं फिर भी अपनी परम्परागत धारणाओं और मान्यताओं से अपना पीछा नहीं छुड़ा पा रहे हैं। आज किन्नर समाज की अत्यंत दयनीय स्थिति के पीछे हाथ हमारे समाज का ही है, जो उन्हें चौन और सम्मान से जीने भी नहीं देता। समाज की वैचारिक मानसिकता किन्नरों के उत्थान कार्य के बारे में सोचने से भी हिचकिचाती है, नीरजा माधव ने 'यमदीप' में किन्नरों की सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

किया है, साथ ही इन्हें समाज की मुख्यधारा में बुनियादी हक देने का मुख्य रूप से प्रयास उपन्यास में किया गया है। किन्नर को सामाजिक, शारीरिक और मानसिक भेदभाव और शोषण से गुजरना पड़ता है। इस संवेदनशीलता की स्थिति ने इनकी स्थिति में और भी अधिक गिरावट उत्पन्न कर दी है। अपनी सामाजिक दृष्टि की सम्पन्नता और जागरूकता के बल पर ही लेखिका ने किन्नरों की यथार्थ स्थिति से पर्दा उठाया है। सामान्य आम आदमी को किन्नरों की तकलीफ से कोई लेना–देना नहीं है। उनका दिल किस प्रकार धड़कता है, कैसी भावनाओं की आकांक्षा करता है, इससे उन्हें कोई सरोकार नहीं है क्योंकि वह खुद सामान्य है और किन्नर असामान्य। किन्नर समाज अपनी जैविक असमानता को झेलता है, यदि माता–पिता ऐसी संतान को स्वीकार करना भी चाहें तो इसे हमारा समाज स्वीकार नहीं करने देता, यही सवाल 'यमदीप' में उठाया गया है। नंदरानी के माता–पिता उसे अपने पास रखना चाहते है, नंदरानी की माता उसे पढ़ा–लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा करना चाहती है। नंदरानी की माँ के सामने महताब गुरु सवाल उठाते हैं कि "माता किसी स्कूल में आज तक हिजड़े को पढ़ते लिखते देखा है? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? मास्टरी में, पुलिस में, कलेक्टरी में. किसी में भी, अरे! इसकी दुनिया यही है माता जी कोई आगे नहीं आयेगा कि हिजड़ों को पढ़ाओ, लिखाओं, नौकरी दो जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार कर रही है।"ऐसे संवाद शायद किन्नरों के यथार्थ जीवन पर प्रकाश डाल रहे हैं। उपन्यास में कहीं–कहीं किन्नरों से डर संबंधी संवादों को भी उभारा गया है। सार्वजनिक स्थलों पर लोग इनसे बात करने और साथ खड़े रहने से भी कतराते हैं। इन सभी मार्मिक प्रसंगों का चित्रण उपन्यास में खुलकर हुआ है, जिससे किन्नर समाज की वास्तविक पीड़ा से हम रू–ब–रू हो सकते हैं।

मनुष्य के जीवन में रिश्ते–नाते बहुत महत्व रखते हैं। किन्नर हो या साधारण बच्चा सभी रिश्तों के लिए तड़पते हैं। ऐसी स्थिति में यदि उस बच्चे को घर से बेघर कर दिया जाए और दर–दर भटकने के लिए छोड़ दिया जाए तो वह आतंकित होगा ही और दूसरों को भी आतंकित करेगा। 'जेनेटिक डिफेक्ट' के कारण यदि कोई बच्चा किन्नर के रूप में पैदा होता है तो इसमें उसका क्या दोष है। उसे भी तो जीने का अधिकार है। आज समय के साथ सोच भी बदल रहा है। कुछ किन्नर पढ़–लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो रहे हैं। साथ ही दूसरों के लिए भी राह दिखा रहे हैं। वे भी हर क्षेत्र में सक्रिय हो रहे हैं। अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं, हाशिया छोड़कर केंद्र में आ रहे हैं। फिर भी इस समाज को उन्हें अपनाने में वक्त लगेगा।

यमदीप' उपन्यास में किन्नरों को समाज की मुख्यधारा से जोड़कर बुनियादी हक देने का पूरा प्रयास किया गया हैं। यदि ऐसे बच्चे को माता–पिता स्वीकार भी करते हैं तो हमारा समाज उसे स्वीकार नहीं करने देता। नंदरानी के माता–पिता उसे अपने पास रखना चाहते हैं और पढ़ा–लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा करना चाहते है, पर हमारा समाज करने दे तब तो करे न? उसे इनकी समस्याओं से क्या लेना है? यह तो बस परम्पराओं के नाम पर शोषण करना जानती हैं।

*****